प्रकृति परमेश्वर की तस्वीर कैसे दिखाती है?

उन लोगों की आत्मिक स्थिति कितनी दयनीय है जिन्होंने ''अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूर्त की समानता में बदल डाला'' है (रोमियों 1:23)। वे लोग कितने अभागे हैं जो सृष्टिकर्त्ता को छोड़ उसकी सृष्टि की उपासना और सेवा करते हैं!

परमेश्वर को सोने की पांच गिल्टियां और पांच चूहे भेंट करके पलिश्तियों द्वारा परमेश्वर की महिमा को घटाने की बात पढ़कर मन में दुख होता है (देखिए 1 शमूएल 6:2-5)।

अश्शूरियों के दिमाग़ में परमेश्वर बहुत ही सीमित और विकृत हो गया था। उन्हें लगता था कि एक देवता पहाड़ियों पर राज करता है और दूसरा वादियों पर।

तर्क से परमेश्वर को जानना

लोगों को यदि भ्रम में न रखा जाए तो वे विशुद्ध रूप से मानवीय तर्क से सच्चे परमेश्वर के होने के विषय में जान सकते हैं। यहां तक कि बाइबल के बिना भी उसके बारे में कई बातों का पता चल सकता है।

वह सृष्टिकर्त्ता है

किसी पर्यटक को, व्हाइट हाउस में अमेरिका के राष्ट्रपति के घर चलते हुए यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि उस भव्य निवास को किसी ने बनाया है। ऐसी बातों में तर्क ही इतना स्पष्ट है कि कोई विवेकी व्यक्ति इसके विपरीत सोच ही नहीं सकता। बनाई हुई किसी भी वस्तु को बनाने वाले के अस्तित्व की आवश्यकता पर जॉयस किल्मर ने अच्छे ढंग से और सुन्दरतापूर्वक वर्णन किया है:

लगता है मुझे एक पेड़ जैसी
सुन्दर कविता कभी नहीं मिलेगी;
पेड़ जो ग्रीष्मकाल में

अपने बालों को चिड़ियों के घोंसला से सजा लेता है।
पेड़ जिसकी पत्तियों पर बर्फ लेट गई है,
जो वर्षा के साथ बड़ा घुल मिल कर रहता है;
पेड़ जिसका भूखा मुंह
पृथ्वी की छाती की मीठी धार से लगा हुआ है।

पेड़ जो दिन भर परमेश्वर की ओर देखता है
और प्रार्थना के लिए पत्तों से भरी अपनी बाहें ऊपर उठाता है,
कविताएं तो मेरे जैसे मूर्ख बनाते हैं
पर पेड़ को केवल परमेश्वर ही बना सकता है।[1]

वह मनुष्य से ऊपर है

इन्सान ने, किसी और के द्वारा उपलब्ध करवाई गई सामग्री का इस्तेमाल करके गगनचुम्बी इमारतें और ध्वनि से तेज चलने वाले जहाज़ तो बना लिए हैं, परन्तु, वह विश्व निर्माण का कार्य नहीं कर रहा है। वास्तव में, हम जानते हैं कि ऐसा संसार बनाने के लिए हमें मनुष्य से ऊपर ही होना आवश्यक है। स्पष्टतः, सृष्टि की रचना करने वाला परमेश्वर इन्सान से असीमित रूप में श्रेष्ठ है।

वह बड़ा शक्तिशाली है

किसी अदृश्य हाथ की सामर्थ से चल रहे विशालकाय ग्रहों (हमारी पृथ्वी का भार 6,59,20,00,00,00,00,00,00,00,000 टन है) के विषय में पढ़ने वाले को बाइबल में से यह समझाने की आवश्यकता नहीं है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है। मनुष्य के लिए परमेश्वर जितनी शक्ति वाले किसी जीव के होने की बात मानना कठिन है।

वह सुव्यवस्थित है

बार-बार आने वाले दिन और रात, गर्मी और सर्दी, और समय से पूर्व बताए जा सकने वाले थोड़ी देर तक लगने वाले ग्रहणों को देखकर यही कहना चाहिए, ''यद्यपि मैंने परमेश्वर को कभी देखा नहीं, परन्तु मैं जानता हूं कि वह अव्यवस्थित नहीं अर्थात मैं जानता हूं कि वह तरतीब और नियम देने वाला परमेश्वर है।''

वह एक है

किसी सुव्यवस्थित घर में से गुजरते हुए, हमें केवल घर की सम्भाल करने वाले अदृश्य व्यक्ति के बारे में ही नहीं बल्कि यह भी पता चलता है कि वहां एक दूसरे के विरुद्ध काम करने वाले दो हाउसकीपर नहीं हैं। हो सकता है कि हमें यह पता न चले कि उस हाउसकीपर के कितने सहायक हैं, परन्तु हमें पूरे घर में एक ही दिमाग़, एक ही दिशा का प्रमाण अवश्य मिलता है। इसी प्रकार प्रकृति के नियमों तथा प्रबन्धों में एकता यह तर्क देती है कि परमेश्वर

एक है और उसका दिमाग़ भी एक है।

परमेश्वर भला है

मानवीय दृष्टिकोण से तूफ़ानों, बीमारी और मृत्यु जैसी प्रकृति की कुछ हानिकारक बातों का कारण नहीं बताया जा सकता है। परन्तु सभी अप्रिय घटनाओं के बावजूद ऐसे असंख्य प्रमाण हैं कि कोई है जो मनुष्य की भलाई के लिए सोच रहा है। कोई इतना भला होना चाहिए था जो बोने के लिए बीज, भोजन के लिए रोटी, आकाश से वर्षा और भोजन तथा आनन्द से मन को तृप्त करने के लिए फलदायक ऋतुएं उपलब्ध करवाता है। ऐसी दयालुता के चिह्न किसी बुरे परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकते, इसलिए हमें यह कहना ही पड़ता है कि बुराई की समस्या के अनुत्तरित प्रश्नों के बावजूद परमेश्वर भला है।

उसे सुन्दरता अच्छी लगती है

भलाई के प्रमाण की तरह ही प्रकृति में ऐसे प्रमाणों की भरमार है कि परमेश्वर सुन्दरता से प्रेम करता है। यद्यपि प्रकृति में कुछ कुरूपता के प्रमाण भी मिलते हैं जिन्हें तर्क द्वारा नहीं समझाया जा सकता; तो भी प्रकृति की सुन्दरता इतनी अधिक प्रभावित करने वाली है कि कोई यह कहने से अपने आपको रोक नहीं सकता कि, ''परमेश्वर खूबसूरत चीज़ों से प्रेम करता है!'' गुलाब का फूल चौरस, बिना रंग के और बिना खूशबू के बनाया जा सकता था। बुलबुलों को सुरीली आवाज़ के बिना बनाया जा सकता था; आंखों को बिना पलक और होंठों को बिना मुस्कान के बनाया जा सकता था। पुनः, यद्यपि कई ऐसे प्रश्न हैं जिनका उत्तर नहीं मिलता, फिर भी ऐसे प्रमाणों की भरमार है जिन्हें देखकर मानना ही पड़ता है कि परमेश्वर सुन्दरता से प्रेम करता है।

वह सदाचारी है

जैसे मनुष्य की देह किसी ने बनाई है, वैसे ही मनुष्य के विवेक को बनाने वाला भी अवश्य ही कोई है। जैसे यह मानना असम्भव है कि मृत तत्व/पदार्थ सही और गलत की भावना को उत्पन्न कर सकता है; वैसे ही यह भी मानना असम्भव है कि परमेश्वर को जिसने विवेक को बनाया, स्वयं सही या गलत की समझ न हो। पुनः, प्रमाण साफ़ है कि नाशवान मनुष्य परमेश्वर को देख तो नहीं सकता, परन्तु उसे यह पता चल सकता है कि उसका बनाने वाला एक सदाचारी जीव है।

परमेश्वर को प्रकाशन के द्वारा जानना

परमेश्वर के विषय में जानने के लिए चाहे प्रकृति के प्रकाश से बहुत सी सच्चाइयां पता चल सकती हैं, परन्तु परमेश्वर की सेवा करने का ढंग पहाड़ों पर लिखा या आकाश में चमकता हुआ नहीं मिलता है। विशेष प्रकाशन के बिना मनुष्य के प्रारम्भ के बारे में थोड़ा बहुत तो जाना जा सकता है, परन्तु उससे मनुष्य के कर्तव्य या भविष्य का पता नहीं चल

सकता। धार्मिक दृष्टिकोण से कहें, तो मनुष्य का मार्ग उसके अपने वश में नहीं है।

स्पष्टतया प्रकृति ने मनुष्य की आवश्यकताओं को पहले से ही देखकर और उसकी संतुष्टि के लिए प्रबन्ध कर दिया था। फेफड़ों के लिए हवा, पेट के लिए भोजन, और अकेलेपन को दूर करने के लिए पत्नियां उपलब्ध करवाई गईं। प्रकृति इतनी दयालु है कि मनुष्य की धार्मिक आवश्यकताओं को संतुष्ट किए बिना नहीं रह सकती। वास्तव में, प्रकृति द्वारा मनुष्यजाति के लिए इतना कुछ करने पर भी, यदि मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता की पूर्ति न होती तो यह बड़े आश्चर्य की बात थी।

जैसे कि किसी को उम्मीद होगी, विश्वसनीय इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि परमेश्वर ने अपने आपको मनुष्य पर विशेष ढंग से प्रकट किया है। पहले उसने मौखिक रूप से, फिर स्वप्न और दर्शनों के द्वारा, फिर पत्थर पर लिखे नियम देकर, और फिर पुस्तक पर लिखे नियम देकर अपने आपको प्रकट किया। परमेश्वर ने धीरे-धीरे मनुष्य को वह ज्ञान दिया जो मनुष्य स्वयं नहीं पा सकता था। अन्त में, मनुष्य बनने के लिए अपने आपको छोटा करने में परमेश्वर की पूर्वदृष्टि, भलाई, सामर्थ, और प्रेम इकट्ठे दिखाए गए। वह *इम्मानुएल* अर्थात ''परमेश्वर हमारे साथ है'' बनना चाहता था। इसके अतिरिक्त वह हमारी बुराइयों के लिए हम सबकी कमियों को पूरा करने के रूप में मरने के लिए अपने आपको *गो'एल* अर्थात छुटकारा दिलाने वाला बनाने को तैयार था। कितने आनन्द से हम पढ़ते हैं कि वह पुनरुत्थान और जीवन अर्थात भरपूरी का जीवन भी बना!

सारांश

सामान्य मानवीय मनों को उसकी ओर खींचा जाता है जिसने पूर्ण रूप से मनुष्य के आरम्भ, कर्तव्य तथा महिमा की आशा को प्रकट किया है। उन्हें क्रूस के दृश्य के द्वारा पुनरुत्थान की महिमा देकर ऊंचा किया जाता है। प्रकृति के सभी अच्छे और सुन्दर दान सर्वश्रेष्ठ प्रेम के सबसे उत्तम रूप अर्थात *अगापे* से बांधे जाते हैं। अनन्त जीवन का अर्थ उस एक सच्चे परमेश्वर और यीशु मसीह को जानना है जिसे उसने भेजा। यही वह परमेश्वर है जिसकी हम आराधना करते हैं।

पाद टिप्पणी

[1]जॉयस किल्मर, *ट्रीज़ एण्ड अदर पोयम्स* (गार्डन सिटी, न्यू.या.: डब्लडे एण्ड कं., 1914), 19.